सम्पादकीय

देश - विदेश

राष्ट्रीय

दिल्ली की चुनावी जंग में कौन सत्ता का ताज पहनेगा?

दिल्ली विधानसभा की 70 सीटों के लिए फरवरी 2025 या उससे पहले चुनाव होने की संभावनाओं को देखते हुए राजनीतिक हलचलें एवं सरगर्मियां उग्र हो गयी है। इस बार के चुनाव में आम आदमी पार्टी लगातार तीसरी बार सत्ता में लौटने की तैयारी में जुट गई है। वहीं, भाजपा और कांग्रेस इस बार सत्ता में वापसी की तैयारी में जुटी है। भाजपा दिल्ली विधानसभा चुनाव दूसरे प्रांतों की ही भांति बिना किसी मुख्यमंत्री चेहरे के लड़ने का मन बना चुकी है और केंद्र सरकार की योजनाओं को जनता के बीच रखेगी। दिल्ली में भाजपा के पास एक से एक मजबूत नेता हैं, लेकिन इनमें से कोई भी नेता मुख्यमंत्री के रूप में पार्टी के लिए पेश नहीं किया जा रहा है। भाजपा दिल्ली में अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिए नए तरीके से चुनावी तैयारियों में जुट चुकी है, वही कांग्रेस अपनी खोयी जमीन को हासिल करने के लिये जद्दोजहद करती हुई दिखाई दे रही है। निश्चित ही इस बार का दिल्ली चुनाव आक्रामक एवं संघर्षपूर्ण त्रिकोणात्मक होगा। आप, कांग्रेस एवं भाजपा की चुनावी जंग में कौन सत्ता का ताज पहनेगा, यह भविष्य के गर्भ है। दिल्ली में भाजपा के लिए यह चुनाव चुनौतीपूर्ण होने के साथ संघर्षपूर्ण भी है। 2015 और 2020 के विधानसभा चुनावों में, जहां पार्टी को शानदार प्रदर्शन की उम्मीद थी, उसे आम आदमी पार्टी से हार का सामना करना पड़ा। तब भाजपा को दिल्ली में मुख्यमंत्री का चेहरा प्रस्तुत करने से कोई बड़ा लाभ नहीं हुआ। इसके बजाए, भाजपा अब चुनावी रणनीतियों में बदलाव कर रही है और अपनी शक्ति को पार्टी संगठन और नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में उनकी लोककल्याणकारी योजनाओं के बल पर मजबूत करने का प्रयास कर रही है। यही कारण है कि दिल्ली भाजपा आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव में केंद्र सरकार के काम और योजनाओं को जनता के बीच रखेगी। पार्टी के रणनीतिकारों का मानना है कि दिल्ली के लोग इससे ज्यादा प्रभावित हो सकते हैं, खासकर जब बात विकास, सुरक्षा, चिकित्सा और शिक्षा जैसे मुद्दों की हो। अगर भाजपा बिना किसी प्रमुख चेहरे के चुनाव लड़ती है तो यह असमंजस की स्थिति बनने की संभावनाएं तो पैदा कर ही सकती हैं। दूसरी ओर, यह फैसला एक रणनीतिक कदम हो सकता है, जिसमें प्रधानमंत्री मोदी की प्रतिष्ठा का इस्तेमाल करके अन्य प्रांतों की भांति दिल्ली में भी चमत्कार घटित हो सकता है। भाजपा ने यह भी तय किया है कि दिल्ली की जनता को बताया जाएगा कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने उनके साथ वादाखिलाफी की है, वे बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा और सड़कों की स्थिति में सुधार का वादा करके उन्हें जर्जर करते रहे हैं। भाजपा का मानना है कि मोदी सरकार की योजनाएं देशभर में सफलता प्राप्त कर रही हैं और इन्हें दिल्ली में लागू किया जाएगा। भाजपा को दिल्ली में हमेशा मिडिल और हाई मिडिल क्लास के लोगों की पार्टी माना जाता है। इसमें व्यापारिक समुदाय इसके कट्टर समर्थक हैं। लेकिन इस बार निचले तबको एवं गरीब लोगों के बीच उसे प्रभावी प्रयास करने होंगे। यह तो दिखता हुआ सच है कि दिल्ली में आप शासन में विकास अवरूद्ध हुआ है, पर्यावरण की समस्या उग्रतर हुई है, आप नेताओं पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगे एवं उनके नेता जेल यात्राएं की है। ऐसे अनेक गंभीर आरोपों के साथ भाजपा आप और उसके नेताओं पर आक्रमक होकर चुनावी परिदृश्यों को बदल सकती है। भाजपा ने कमर कस ली है और उसके नेता लगातार जनता के बीच जाकर बदलाव की अपील कर रहे है। इसके तहत इन दिनों जहां परिवर्तन सभाओं का आयोजन किया जा रहा है, वहीं अगले हफ्ते से पूरी दिल्ली में परिवर्तन यात्राएं भी निकाली जाएंगी। इन यात्राओं के माध्यम से आम मतदाताओं से निजी तौर पर मिलते हुए, उनसे बात करते हुए उनको पार्टी के साथ जोड़ा जायेगा। उनके दु:ख-दर्द को सुना जायेगा। भाजपा का इतिहास रहा है कि वह आम जन तक पहुंचने के लिए ऐसी यात्राएं निकालती रही है एवं व्यक्तिगत संवाद स्थापित करती रही है। भाजपा नेता सतीश उपाध्याय ने कहा कि दिल्ली में एक भ्रष्ट सरकार चल रही है लेकिन अब तो रंगदारी, वसूली, फिरौती और आम नागरिकों के बीच डर पैदा करने की भी कोशिश की जा रही है। इसके चलते दिल्ली की जनता अब सत्ता परिवर्तन के मूड में है और देशविरोधी मानसिकता वाली सरकार को इस बार विधानसभा से उखाड़ फेंकने का मन बना चुकी है। देखना है कि भाजपा के इन आरोपों का जनता पर कितना असर होता है।

अंतर्राष्ट्रीय

इजरायल-हमास युद्ध में मारे जा चुके हैं 42 हजार लोग, यूएन में युद्ध विराम को लेकर प्रस्ताव पारित

हमास के हमले के जवाब के नाम पर शुरू हुए इजराइली आक्रमण अब भी जारी हैं और उसके खत्म होने का कोई सिरा फिलहाल नहीं दिख रहा है। इस क्रम में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक प्रस्ताव पारित किया, जिसके तहत गाजा में तत्काल युद्धविराम लागू किए जाने की मांग की गई है। साथ ही हमास और फिलिस्तीनी गुटों की हिरासत में रखे गए बंधकों की रिहाई के लिए भी कदम उठाने को कहा गया है। एक अन्य प्रस्ताव में इजराइल से फिलिस्तानी शरणार्थियों की मदद के लिए संयुक्त राष्ट्र एजंसी पर से प्रतिबंध हटाने की भी मांग की गई है। युद्ध विराम के प्रस्ताव के समर्थन में एक सौ अट्ठावन मत पड़े, जबकि विरोध में केवल नौ मत। जाहिर है, कुछ देशों को छोड़ कर दुनिया के ज्यादातर देश युद्ध के विरुद्ध हैं और ऐसी स्थिति में इजराइल को भी इस पर विचार करने की जरूरत है। गौरतलब है कि पिछले वर्ष अक्तूबर की शुरूआत में इजराइली सीमा के भीतर हमास के हमले में करीब बारह सौ लोगों के मारे जाने के बाद उसके जवाब में इजराइल ने गाजा पर हमला किया था, जिसमें तब से अब तक बयालीस हजार से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं। इजराइल की दलील अब भी यही है कि वह हमास के आतंकियों का सफाया कर देगा। सवाल है कि जितने लोगों की जान अब तक जा चुकी है, उनमें से कितने वास्तव में हमास या उससे जुड़े आतंकी थे! यह कोई छिपा तथ्य नहीं है कि मारे जाने वालों में गिनती के कुछ को छोड़ दिया जाए तो आमतौर पर सभी गाजा में रहने वाले आम लोग थे, जिनका युद्ध से कोई वास्ता नहीं था। अपने लिए इंसाफ की इच्छा करते और दलील देते हुए इजराइल ने जिस तरह गाजा पर हमले के क्रम में अंतरराष्ट्रीय कानूनों को ताक पर रख कर अस्पतालों और शरण-स्थलों तक को नहीं बख्शा, महिलाओं से लेकर छोटे मासूम बच्चों तक तक मारे गए, उससे यही लग रहा है कि अब इजराइल एकतरफा युद्ध कर रहा है। उसे दुनिया के तमाम देशों सहित संयुक्त राष्ट्र तक की ओर से युद्ध खत्म करने की औपचारिक रूप से की गई मांग पर भी विचार करना जरूरी नहीं लगता।

दुनिया में लोकतंत्र के सभी पैरोकार बिना किसी सवाल के यह मानते हैं कि युद्ध किसी समस्या का हल नहीं हो सकता। मगर इसके समांतर से दो या इससे ज्यादा देशों के बीच किसी ऐसे मसले पर युद्ध की शुरूआत हो जाती है जिसे बातचीत के जरिए सुलझाया जा सकता था। इसके बाद होता यही है कि युद्ध में शामिल देशों में होने वाले हमलों में आमतौर पर ऐसे लोग मारे जाते हैं, जिनका युद्ध से कोई लेना-देना नहीं होता। इसमें बच्चों और महिलाओं तक को नहीं छोड़ा जाता। विचित्र यह है कि इस तरह के टकराव में शामिल पक्ष आमतौर पर अपने पक्ष को न्याय और शांति का पैरोकार बताते हैं, जबकि अगर वे खुद युद्ध में शामिल एक पक्ष होते हैं तो उनके हमले में हजारों निर्दोष लोग मारे जाते हैं।

सर्वस्व

धर्म-आध्यात्म

'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'-

मकर संक्रांति के दिन ही गंगाजी कपिल मुनि के आश्रम से होती हुई सागर में जाकर मिली थीं

हिंदुओं में मकर संक्रांति का त्योहार बहुत धुमधाम से मनाया जाता है। पौष मास में जब सूर्य मकर राशि पर आता है तभी इस पर्व को मनाया जाता है। इस दिन जप, तप, दान, स्नान, श्राद्ध, तर्पण आदि धार्मिक क्रियाकलापों का विशेष महत्व है।

किया जाता है दान: सूर्य का धनु राशि को छोड़ मकर राशि में प्रवेश मकर संक्रांति कहलाता है। इसी दिन सूर्य उत्तरायण होते हैं। शास्त्रों में यह समय देवताओं का दिन और दक्षिणायन को देवताओं की रात्रि कहा जाता है। मकर संक्राति सूर्य के उत्तरायण होने से गरम मौसम की शुरुआत होती है। मान्यता है कि इस दिन किया गया दान सौ गुना होकर लौटता है। इसलिए भगवान भास्कर को अर्घ्य देने के बाद पूजन करके घी, तिल, कंबल और खिचड़ी का दान किया जाता है।

मकर संक्रांति का इतिहास: श्रीमद्भागवत एवं देवी पुराण के मुताबिक, शनि महाराज का अपने पिता से वैर भाव था क्योंकि सूर्य देव ने उनकी माता छाया को अपनी दूसरी पत्नी संज्ञा के पुत्र यमराज से भेद-भाव करते देख लिया था, इस बात से नाराज होकर सूर्य देव ने संज्ञा और उनके पुत्र शनि को अपने से अलग कर दिया था। इससे शनि और छाया ने सूर्य देव को कुष्ठ रोग का शाप दे दिया था।

यमराज ने की थी तपस्या: पिता सूर्यदेव को कुष्ट रोग से पीड़ित देखकर यमराज काफी दुखी हुए। यमराज ने सूर्यदेव को कुष्ठ रोग से मुक्त करवाने के लिए तपस्या की। लेकिन सूर्य ने क्रोधित होकर शनि महाराज के घर कुंभ जिसे शनि की राशि कहा जाता है उसे जला दिया। इससे शनि और उनकी माता छाया को कष्ठ भोगना पड़ रहा था। यमराज ने अपनी सौतली माता और भाई शनि को कष्ट में देखकर उनके कल्याण के लिए पिता सूर्य को काफी समझाया। तब जाकर सूर्य देव शनि के घर कुंभ में पहुंचे।

मकर में हुआ सूर्य का प्रवेश: कुंभ राशि में सब कुछ जला हुआ था। उस समय शनि देव के पास तिल के अलावा कुछ नहीं था इसलिए उन्होंने काले तिल से सूर्य देव की पूजा की। शनि की पूजा से प्रसन्न होकर सूर्य देव ने शनि को आशीर्वाद दिया कि शनि का दूसरा घर मकर राशि मेरे आने पर धन धान्य से भर जाएगा। तिल के कारण ही शनि को उनका वैभव फिर से प्राप्त हुआ था इसलिए शनि देव को तिल प्रिय है। इसी समय से मकर संक्राति पर तिल से सूर्य एवं शनि की पूजा का नियम शुरू हुआ।

काले तिल से की पूजा: शनि देव की पूजा से प्रसन्न होकर सूर्य देव ने शनि महाराज को आशीर्वाद दिया कि जो भी व्यक्ति मकर संक्राति के दिन काले तिल से सूर्य की पूजा करेगा उसके सभी प्रकार के कष्ट दूर हो जाएंगे। इस दिन तिल से सूर्य पूजा करने पर आरोग्य सुख में वृद्धि होती है। शनि के अशुभ प्रभाव दूर होते हैं तथा आर्थिक उन्नति होती है। तिल का भोग लगाने के बाद उसे प्रसाद के रूप में भी ग्रहण करना चाहिए।

आध्यात्मिक लेख

माता-पिता की आज्ञा लेकर मार्कण्डेयजी दक्षिण समुद्र-तट पर चले गये और वहां अपने ही नाम से एक शिवलिंग स्थापित किया । तीनों समय वे स्नान करके भगवान शिव की पूजा करते और अंत में मृत्युंजय स्तोत्र पढ़कर भगवान के सामने नृत्य करते थे ।

भगवान शिव के प्रसिद्ध नाम महाकाल और मृत्युजंय हैं

भगवान शिव के प्रसिद्ध नाम महाकाल और मृत्युजंय हैं। शिव के मृत्युंजय नाम की सार्थकता यही है कि जिस वस्तु से जगत् की मृत्यु होती है, उसे वह जय कर लेते हैं तथा उसे भी प्रिय मानकर ग्रहण करते हैं ।

'शिवस्य तु वशे कालो न कालस्य वशे शिवः।'

अर्थात्—'हे शिव ! काल आपके अधीन है, आप काल से मुक्त चिदानन्द हैं।' जिसे मृत्यु को जीतना हो, उसे हे भगवन् ! आपमें स्थित होना चाहिए। आपका मन्त्र ही मृत्युञ्जय है। कठोपनिषद् में कहा गया है-'समस्त विश्व प्रपंच जिसका ओदन (भात) है, मृत्यु जिसका उपसेचन (दूध, दही, दाल या कढ़ी) है, उसे कौन, कैसे, कहां जाने? जैसे प्राणी कढ़ी-भात मिलाकर खा लेता है, उसी तरह प्रलयकाल में समस्त संसार प्रपंच को मिलाकर खाने वाला परमात्मा शिव मृत्यु का भी मृत्यु है, अत: महामृत्युंजय भी वही है, काल का भी काल है, अत: वह कालकाल या महाकालेश्वर कहलाता है। उसी के भय से सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु, इन्द्र आदि नियम से अपने-अपने काम में लगे हैं। उसी के भय से मृत्यु भी दौड़ रही है ।'

उन्हीं भगवान महाकाल शिव ने अल्पायु मार्कण्डेयजी को उनके स्तोत्र पाठ से प्रसन्न होकर श्रावण मास में अमरता का वरदान दिया था। महामुनि मृकण्डु के कोई संतान नहीं थी। उन्होंने अपनी पत्नी मरुद्वती के साथ तपस्या कर भगवान शंकर को प्रसन्न किया। भगवान शंकर ने मृकण्डु मुनि से कहा—'क्या तुम गुणहीन चिरंजीवी पुत्र चाहते हो या केवल सोलह वर्ष की आयु वाले एक सभी गुणों से युक्त, लोक में यशस्वी पुत्र की इच्छा रखते हो ?'

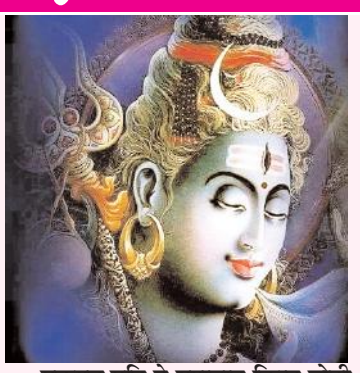

मृकण्डु मुनि ने गुणवान किन्तु छोटी आयु वाले पुत्र का वर मांगा

समय आने पर मृकण्डु मुनि के घर सूर्य के समान तेजस्वी पुत्र का जन्म हुआ । मरुद्वती के सौभाग्य से साक्षात् भगवान शंकर का अंश ही बालक के रूप में प्रकट हुआ । मृकण्डु मुनि ने बालक के सभी संस्कार सम्पन्न किये और उसे सभी वेदों का अध्ययन कराया। बालक मार्कण्डेय केवल भिक्षा के अन्न से ही जीवन निर्वाह करता और माता-पिता की सेवा में ही लगा रहता था।

भगवान शिव और उनका नाम समस्त मंगलों का मूल है: जब मार्कण्डेयजी की आयु का सोलहवां वर्ष शुरु हुआ तो मृकण्डु मुनि शोक में डूब कर विलाप करने लगे । अपने पिता को विलाप करते देखकर मार्कण्डेयजी ने उनसे इसका कारण पूछा। मृकण्डु मुनि ने कहा—'पिनाकधारी भगवान शंकर ने तुम्हें केवल सोलह वर्ष की आयु दी है । उसकी समाप्ति का समय अब आ पहुंचा है; इसलिए मुझे शोक हो रहा है ।' मार्कण्डेयजी ने कहा—'आप मेरे लिए शोक न करें । मैं मृत्यु को जीतने वाले, सत्पुरुषों को सब कुछ देने वाले, महाकालरूप और कालकूट विष का पान करने वाले भगवान शंकर की आराधना करके अमरत्व प्राप्त करुंगा ।' मृकण्डु मुनि ने कहा—'तुम उन्हीं की शरण में जाओ, उनसे बढ़कर तुम्हारा दूसरा कोई भी हितैषी नहीं है ।' माता-पिता की आज्ञा लेकर मार्कण्डेयजी दक्षिण समुद्र-तट पर चले गये और वहां अपने ही नाम से एक शिवलिंग स्थापित किया । तीनों समय वे स्नान करके भगवान शिव की पूजा करते और अंत में मृत्युंजय स्तोत्र पढ़कर भगवान के सामने नृत्य करते थे। उस स्तोत्र से भगवान शंकर शीघ्र ही प्रसन्न हो गये। जिस दिन मार्कण्डेयजी की आयु समाप्त होने वाली थी, वे पूजा कर रहे थे, मृत्युंजय स्तोत्र पढ़ना बाकी था । उसी समय मृत्युदेव को साथ लिए काल उन्हें लेने के लिए आ पहुंचा और उसने मार्कण्डेयजी के गले में फंदा डाल दिया।

मार्कण्डेयजी ने कहा—'मैं जब तक भगवान शंकर के मृत्युंजय स्तोत्र का पाठ पूरा न कर लूं, तब तक तुम मेरी प्रतीक्षा करो। मैं शंकरजी की स्तुति किये बिना कहीं नहीं जाता हूँ ।' काल ने हंसते हुए कहा—'काल इस बात की प्रतीक्षा नहीं करता कि इस पुरुष का काम पूरा हुआ है या नहीं। काल तो मनुष्य को सहसा आकर दबोच लेता है।' मार्कण्डेयजी ने काल को फटकारते हुए कहा—'भगवान शंकर के भक्तों पर मृत्यु, ब्रह्मा, यमराज, यमदूत और दूसरे किसी का प्रभुत्व नहीं चलता है।